

जाट छात्रावास, अलवर

1. छात्रावास का नाम व पता — जाट छात्रावास, अलवर

स्टेशन रोड़, अलवर

संचालक संस्था — अलवर जिला जाट महासभा समिति, अलवर

रजि. नम्बर — 147/अलवर/2005-06

2. **इतिहास** — अलवर में जाट समाज में जागृति लाने में चौधरी नानक चन्द ठेकेदार अग्रणी रहे हैं। पुष्कर में 28 से 30 अक्टूबर 1925 को महाराजा कृष्ण सिंह भरतपुर की अध्यक्षता में आयोजित अखिल भारतीय जाट महासभा के सम्मेलन में अलवर से चौधरी नानकचन्द ठेकेदार ने भाग लिया, जिसमें भरतपुर महाराजा ने जाटों में शिक्षा प्रचार करने व जातीय संगठन बनाने आदि पर जोर दिया। चौधरी नानक चन्द ठेकेदार इस सम्मेलन से बहुत प्रभावित हुए, एवं वापस अलवर जाकर इस दिशा में कार्य करना शुरू कर दिया। अलवर महाराजा जयसिंह के निरंकुश शासन से कोम को मुक्ति दिलाने के लिए शिक्षा प्रचार-प्रसार हेतु 1933 में खानपुर गॉव में जाट पाठशाला खोलकर बच्चों को पढ़ाने के लिए एक अध्यापक चौधरी रामहेत को नियुक्त किया। शिक्षा प्रसार के साथ-साथ उन्होंने जातीय संगठन बनाने की सोची। इसी क्रम में उन्होंने 1936 में जाटों के 202 गाँवों की सभा बुलाकर (अलवर राज्य जाट क्षत्रिय संघ) की स्थापना की। जिसके प्रथम अध्यक्ष ले. चौधरी रामस्वरूप सिंह थे। अप्रैल 1940 में इस संघ के तीसरे सम्मेलन में जाट धर्मशाला एवं जाट बोर्डिंग हाऊस अलवर शहर में बनाने का निर्णय लिया गया। चौधरी नानक चन्द ठेकेदार ने नगरपरिषद अलवर से छात्रावास के लिए जमीन आवंटित करवायी, एवं 05 मार्च 1946 को ले. चौधरी रामस्वरूप सिंह के द्वारा जाट बोर्डिंग व जाट धर्मशाला का शिलान्यास करवाया गया। चौधरी रामस्वरूप अलवर राज्य जाट क्षत्रिय संघ के शुरुआती समय में अध्यक्ष रहे। चौधरी नानकचन्द, कर्नल गोकूल राम जी व अन्य सहयोगियों ने मेहनत करके बोर्डिंग का निर्माण करवाया। समाज से चन्दा एकत्रित कर करीब 46 हजार रुपये में 05 कमरें एवं बरामदे का निर्माण करवाकर छात्रावास का शुरुआती भवन बनाया गया। अलवर छात्रावास के साथ-साथ धर्मशाला का भी निर्माण करवाया गया। चौधरी नानक चन्द ठेकेदार के बाद स्वामी हरीदास दुसरे व्यक्ति हैं, जिन्होंने जाट छात्रावास एवं जाट धर्मशाला अलवर के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। स्वामी हरीदास को 1970 के दशक में अलवर राज्य जाट क्षत्रिय संघ का संरक्षक नियुक्त किया गया। स्वामी श्री हरीदास ने अलवर जिले के विभिन्न गावों में जाकर चन्दा एकत्रित किया। स्वामी हरीदास जी की टीम में चौधरी नाथु सिंह, स्वं श्री गेदालाल मास्टर, स्वं श्री गणेशराम, स्वं श्री मखनलाल ठेकेदार, स्वं श्रीराय बिहारी ठेकेदार, स्वं श्री बन्नासिंह, स्वं श्री के सिंह चौधरी, स्वं श्री रामस्वरूप चौधरी, श्री मोरध्वज सिंह चौधरी आदि शामिल थे। स्वामी जी ने इस चन्दे से प्रथम मंजिल व द्वितीय मंजिल के 76 कमरों एवं 10 दुकानों का निर्माण करवाया। दुकानों के ऊपर प्रथम मंजिल के 06 कमरें धर्मशाला के लिए एवं शेष कमरें छात्रावास के लिए संचालित हैं। धर्मपाल चौधरी पूर्व विधायक एवं अध्यक्ष ने पुराने 05 कमरों की जगह नये सभा भवन का भी निर्माण करवाया।

3. कार्यकारिणी — पूर्व के संरक्षक एवं अध्यक्षों का विवरण —

1. ले. चौधरी रामस्वरूप सिंह
2. चौधरी नानक चन्द ठेकेदार
- 3.

वर्तमान कार्यकारिणी – सूची प्राप्त हो गयी है।

4. भौतिक संसाधन (सुविधाएँ)– प्रथम व द्वितीय मंजिल में 76 कमरें एवं 10 दुकाने बनी हुई हैं। एक भोजन शाला एवं एक सभा भवन बना हुआ है।

(4) भौतिक संसाधन (सुविधाएँ) –चारदीवारी, कमरें, हॉल, पुस्तकालय, पुस्तकें, कम्प्यूटर एवं कम्प्यूटर कक्ष, भोजनशाला, दुकानें, खेल मैदान सहित अन्य भौतिक सुविधाओं का विवरण।

(5) विद्यार्थी विवरण (a) वर्तमान विद्यार्थियों का विवरण – वर्तमान में कॉलेज एवं प्रतियोगि परीक्षा की तैयारी करने वाले 60 विद्यार्थी छात्रावास में रह रहे हैं।

(b) वार्डन

(c) पूर्व विद्यार्थी (एलुमिनी) का विवरण

(6) प्रवेश प्रक्रिया (पात्रता, सीट) एवं नियमावली का विवरण

(7) शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियाँ – अध्ययन, कोचिंग, ऑनलाइन स्टडी, टेस्ट, स्मार्ट कक्षाएँ, खेलकूद, विशेष मार्गदर्शन शिविर, सेमिनार, विशेष समारोह, जयन्तियाँ आदि का विवरण।

(8) वित्तीय प्रबंधन एवं आय स्रोत–

(9) भोजन एवं आवास व्यवस्था – विद्यार्थियों के लिए सामुहिक मैसेज की व्यवस्था नहीं होने के कारण अपने अपने स्तर पर खाना बनाते हैं एवं अध्ययन करते हैं।

(10) (a) संस्थान के नजदीकी शिक्षण संस्था (मध्य दूरी) केन्द्रीय विद्यालय, मॉडल स्कूल, अग्रेजी माध्यम विद्यालय, कॉलेज, विश्वविद्यालय, प्रशिक्षण संस्थान (राजकीय एवं निजी संस्थान)–

(b) समाज के ट्रस्ट या संस्थान या व्यक्ति विशेष द्वारा संचालित निजी विद्यालय, कॉलेज, प्रशिक्षण संस्थान या कोचिंग संस्थान का विवरण।